कक्षा- VIII

Page No.: 8

Date:

5 " कण्टकेनैव कण्टकम् "

कोई चञ्चल नामक शिकारी था। वह पशु-पक्षियों को ~~अप~~ पकड़कर अपनी जीविका निर्वाह करता था। एक दिन वह जंगल में जाल फैलाकर घर आ गया। दूसरे दिन प्रातःकाल में जब चञ्चल वन गया तब उसने देखा कि उसके द्वारा फैलाए जाल में दुर्भाग्य से एक बाघ बंधा हुआ था। उसने सोचा - 'बाघ मुझे खाएगा इसलिए भाग जाना चाहिए। बाघ ने निवेदन किया- हे मनुष्य! तुम्हारा कल्याण हो। यदि तुम मुझको छुड़ाओगे तो मैं तुमको नही मारूँगा।' तब शिकारी ने बाघ को जाल से बाहर निकाला। बाघ थका हुआ था। उसने कहा - 'हे मनुष्य! मैं प्यासा हूँ। नदी का जल लाकर मेरी प्यास शान्त करो। बाघ ने जल पीकर पुनः शिकारी को कहा, 'मेरी प्यास शांत हुई। अब (मैं) भूखा हूँ। अब मैं तुमको खाऊँगा।' चञ्चल बोला,- 'मैं ने तुम्हारे लिए धर्म आचरण किया। तुमने झूठ कहा। तुम मुझको खाना चाहते हो?

बाघ बोला - अरे मूर्ख! भूख के लिए कुछ भी कार्य ऐसा नही है जो नही होता अर्थात् भूख के लिए कुछ भी किया जा सकता है। सब अपना भला सोचते है।

कक्षा - VIII

Page No.: 9

5 "कण्टकेनैव कण्टकम्"

चञ्चल ने नदी के जल को पूछा। नदी का जल बोला, 'ऐसा ही होता है, लोग मुझमें स्नान करते हैं, वस्त्र धोते हैं और मल-मूत्र आदि छोड़कर चले जाते हैं, वस्तुत सब अपना भला चाहते हैं।

चञ्चल ने पेड़ के पास जाकर पूछा। पेड़ बोला, 'मनुष्य हमारी छाया में विश्राम करते हैं। हमारे फल खाते हैं, पुनः कुल्हाड़ियों से प्रहार करके हमें हमेशा कष्ट देते हैं। जहाँ कहीं भी काटते हैं। सब अपना भला चाहते हैं।'

पास में एक लोमड़ी बेर की झाड़ियों के पीछे छुपी हुई यह बात सुन रही थी। वह अचानक चञ्चल के समीप जाकर कहती है - "क्या बात है? मुझे भी बताओ।" उसने कहा - "अहो मौसी! समय पर तुम आई हो। मेरे द्वारा इस बाघ के प्राण बचे, परन्तु यह मुझे ही खाना चाहता है।" उसके बाद उसने लोमड़ी को पूरी कथा बताई।

लोमड़ी ने चञ्चल को कहा - ठीक है, तुम जाल फैलाओ। फिर उसने बाघ को कहा - किस प्रकार से तुम इस जाल में बंध गए यह मैं अपने सामने देखना चाहती हूँ। बाघ ने उस पूरी कहानी का प्रदर्शन करने के लिए जाल में प्रवेश किया।

लोमड़ी ने पुनः कहा - अब बार-बार उछल-कूद करके दिखाओ। उसने वैसा ही किया। लगातार कूदने से वह थक गया। जाल में बंधा हुआ वह ~~बा~~ बाघ थकते हुए निःसहाय होकर वहाँ गिर गया और प्राणों की भिक्षा माँगने लगा। लोमड़ी ने बाघ को कहा - तुमने सत्य कहा था - 'सब अपना भला चाहते है।"

कक्षा-VIII

5 "कण्टकेनैव कण्टकम्"

प्रश्न पुस्तक से स्वयं लिखिए -

उत्तर:- (1) एकपदेन उत्तरं

(क) चञ्चलः

(ख) जाले

(ग) क्षुधार्ताय

(घ) लोमशिका

(ङ) स्वार्थं

(च) प्राणभिक्षाम्

उत्तर:- (2) पूर्णवाक्येन उत्तरं

(क) चञ्चलेन वने जालं विस्तीर्य गृहं आगतवान् ।

(ख) व्याघ्रस्य पिपासा जलं पीत्वा शान्ता अभवत् ।

(ग) जलं पीत्वा व्याघ्रः अवदत् - 'शमय मे पिपासा। साम्प्रतं बुभुक्षितोऽस्मि । इदानीम् अहं त्वां खादिष्यामि।

(घ) चञ्चलः 'मातृस्वसः!' इति लोमशिकां सम्बोधितवान् ।

(ङ) जाले पुनः बद्धं व्याघ्रं दृष्ट्वा व्याधः प्रसन्नः भूत्वा गृहं प्रत्यावर्तत ।

5 "कण्टकेनैव कण्टकम्"

प्रश्न पुस्तक से स्वयं लिखिए -

उत्तर (3)	कः / का	कं / कां
(क)	व्याघ्रः	व्याघ्रं
(ख)	नदीजलम्	चञ्चलं
(ग)	चञ्चलः	व्याघ्रं
(घ)	वृक्षः	चञ्चलं
(ङ.)	लोमशिका	व्याघ्रं

उत्तर (4)

(क) व्याधः व्याघ्रं कस्मात् बहिः निस्सारयत् ?

(ख) चञ्चलः कम् उपगम्य अपृच्छत् ?

(ग) व्याघ्रः कस्यै निखिलां कथां न्यवेदयत् ?

(घ) मानवाः केषां छायायां विरमन्ति ?

(ङ.) व्याघ्रः कस्याः जलेन व्याघ्रस्य पिपासामशामयत् ?

उत्तर (5)

(i) वृक्षः
(ii) कृतवान्
(iii) अकस्मात्
(iv) दृष्ट्वा
(v) मोचयितुम्
(vi) साट्टहासम्
(vii) क्षुद्रैः
(viii) तर्हि
(ix) स्वकीयैः
(x) कर्तनम्

5 "कण्टकेनैव कण्टकम्"

6. प्रश्न पुस्तक से स्वयं लिखिए –

उत्तर→ 6

(क) विशेषणपदं → सर्वां ।

(ख) अहम् इति सर्वनामपदं चञ्चलाय प्रयुक्तम् ।

(ग) कर्तृपदं → सर्वः

(घ) अव्ययपदं → सहसा

(ङ.) क्रियापदं → विज्ञापय
पदपरिचयम् → वि उपसर्ग + ज्ञा धातु मध्यमपुरुषः एकवचनं

उत्तर→ 7 (अ)

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
स्वसृ (प्रथमा)	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
स्वसृ (तृतीया)	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
मातृ (सप्तमी)	मातरि	मात्रोः	मातृषु
मातृ (षष्ठी)	मातुः	मात्रोः	मातृणाम्

(आ)

पदानि		धातुः		प्रत्ययः
द्रष्टुम्	=	दृश्	+	तुमुन्
करणीयम्	=	कृ	+	अनीयर्
पातुम्	=	पा	+	तुमुन्
खादितुम्	=	खाद्	+	तुमुन्
कृत्वा	=	कृ	+	क्त्वा